IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत मे बदलता हुआ शिक्षा प्रारुप व राजनीतिक नीतियाँ व विचार

Geeta devi

Student

Central University of Himachal Pradesh

सार:--

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य भारत व उसके राज्यो मे बदलता हुए शिक्षा प्रारुपो शिक्षा पर बनी नई नीति का हमारी वर्तमान शैक्षणिक संस्थान पर प्रभाव तथा भारत की विदेश नीति व भारतीय पाश्चात्य राजनीतिक विचारो का अध्ययन किया गया है। ईस अध्ययन के अंतर्गत मिश्रित शोध विधियो व नवीन सूचना के माध्यमो का समीक्षात्मक तरीके से विश्लेषण करके उसका अवलोकन करके तथ्यो का संकलन किया गया है।अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है, कि वर्तमान मे शिक्षा व्यवस्था के प्रारुप मे जो परिवर्तन, एक संरचनात्मक निकाय का निर्माण तथा विश्व राजनीति मे भारत व अन्य देशो का बेहतर सहयोग, नीतियाँ, परस्पर तालमेल देखा जा सकता है।

सूचक शब्द:-

विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, बुनियाद और शिक्षा नीति।

भारत मे बदलता हुआ शिक्षा प्रारुप:-

भारतीय शिक्षा का इतिहास:-

भारतीय शिक्षा का इतिहास भारतीय सभ्यता का भी इतिहास है। प्राचीन भारत मे जिस शिक्षा व्यवस्था का भारत केन्द्र रहा था, वह समकालीन विश्व की शिक्षा व्यवस्था से संपन्न व उत्कृष्ट थी, लेकिन कालांतर मे भारतीय शिक्षा का ह्रास हुआ।

ऐतिहासिक भारतीय धरोहर व वयवस्था:-

वैदिक काल से लेकर अब तक भारतवासियो के लिए शिक्षा का शिक्षा प्रकाश का स्त्रोत है तथा जीवन के विभिन्न कार्यो मे यह हमारा मार्ग आलोकित करती है।

तमसो म ज्योतिर्मय ।

यह वाक्य भारतीय उपनिषद श्लोक बृहदारण्यकोपनिष्द पर शिक्षा पद्वति चलती है।

प्रचीन भारतीय शिक्षा:-

भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था आध्यात्मिकता पर आधारित थी। शिक्षा को मुक्ति एवं आत्मबोध का साधन के रूप मे जाना जाता था। भारतीय मनीषयो ने शिक्षा को तिसरा नेत्र उपमाओ से विभूषित किया।

भारतीय ऐतिहासि धरोहरे:-

प्राचीन भारत मे गुरुकुल व्यवस्था प्रचलित थी, विद्यार्थी गुरु का सम्मान करते थे। प्राचीन भारत की शिक्षा प्रारंभिक रूप हम मे देखते है।

विद्यालय 'गुरुकुल' 'आचार्यकुल' 'गुरुगृह' इत्यादी नामो से विदित थे। शिक्षको को 'आचार्य' और 'गुरु' कहा जाता था। भारतीय शिक्षा मे आचार्य का स्थान बडा ही गौरव का था।

विश्व का सबसे प्रथम विश्वविद्यालय तक्षशिला (भारत) मे था। यह 700 इसा पूर्व (2700 वर्ष पूर्व) मे स्थापित हुई थी। तक्षशिला विश्वविद्यालय मे पूरे विश्व के 10500 से अधिक छात्र अध्ययन करते थे। यह प्रथम केंद्रीय विश्वविद्यालय था और यहा 60 से भी अधिक विषयो को पढाया जाता था।

तक्षशिला को 1980 ई॰ मे UNESCO ने विश्व धरोहर स्थल साइट मे डाला था।

आचार्य चाणक्, जीविक, विष्णु शर्मा, पाणिनी आदि अनेक विद्वान इसी विश्वविद्यालय मे पढे थे।

;-- काशी, तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वलभी, जगद्दल, नदिया, मिथिला,प्रयाग, अयोध्या आदि ऐतिहासिक शिक्षा के केन्द्र भारत की प्राचीन धरोहरे है। जहां शिक्षा का उज्जवल प्रकाश चारो ओर फेलता था।

आधुनिक काल मे शिक्षा का बदलता प्रारुप:-

आधुनिक काल:-

भारत मे आधुनिक शिक्षा की नीव यूरोपीय ईसाई धर्मप्रचारक तथा व्यापारियो के हाथो से हुई। उन्होंने कई विद्यालय स्थापित किए। प्रारंभ मे मद्रास ही उनका कार्यक्षेत्र रहा।

प्रायः 150 वर्ष बीतते-बीतते 1600 ई॰ मे व्यापारी ईस्ट इंडिया कंपनी राज्य करने लगी। इन्होने शुरुआत मे विषेश कारण और उद्देश्य से 1781 मे कलकत्ते मे 'कलकत्ता मद्रास' कंपनी द्वारा पहला संस्थान खोला गया और 1792 मे दुसरा बनारस मे 'संस्कृत कॉलेज' जोनाथन डंकन द्वारा स्थापित किया गया।

:--- शिक्षा पर 1835 ई॰ मे लार्ड मेकाले का मिनट आया। यह नीति शिक्षा की उस व्यवस्था को बनाने का एक प्रयास थी, जो अग्रेजी के माध्यम से समाज के केवल ऊपरी तबके को शिक्षित करती है।

लार्ड मेकाले 1835 ई॰ नीति का उद्देश्य:-

खुन से भारतीय और स्वाद से ब्रिटिश: वह ब्रिटिश हितो की सेवा करने और उनके प्रति वफादार रहने मे सक्षम भारतीयो का एक पूल बनाना चाहते थे। यह समूह "खून और रंग से भारतीय, लेकिन स्वाद, राय, नैतिकता और बुद्धि से अंग्रेजी होगा।"

1854 का वुडडिस्पेच:-

1833 मे शिक्षा की प्राप्ति की जाँच करने के लिए एक समिति बनी। 1854 के वुड के शिक्षा संदेश पत्र मे समिति के निर्णय कंपनी के पास भेज दिए। संस्कृत, अरबी और फारसी का ज्ञान आवश्यक समझा गया। औद्योगिक विद्यालयो और विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव रखा।

1857 मे स्वतंत्रा का युद्ध छिड गया।जिससे शिक्षा की प्रगती मे बाधा पडी। प्राथमिक शिक्षा उपेक्षित ही रही। उच्च शिक्षा की उन्नति होती गई। 1857 मे कलकत्ता, बंबई और मद्रास मे विश्वविद्यालय स्थापित हुए।

वुडडिस्पेच को शिक्षा का मेगा कांटा भी कहा जाता है।

इसके बाद देश की उन्नति चाहने वाले भारतीयो मे व्यापक और स्वतंत्र राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता का बोध होने लगा।

स्वतन्त्रताप्रेमी भारतीयो और भारतप्रेमीयो ने सुधार का काम उठा लिया। 1870 मे बाल गंगाधर तिलक और उनके सहयोगियो द्वारा पूना मे फर्ग्यूसन कॉलेज, 1886 मे आर्यसमाज द्वारा लाहौर मे दयानंद ऐंग्लो कॉलेज और 1898 मे काशी श्रीमती एनी बेसेन्ट द्वारा हिंदू कॉलेज स्थापित किए गए।

अन्य सुधार:- 1894 मे कोल्हापुर रियासत के राजा छत्रपति साहूजी महाराज ने दलित और पिछडी जाति के लोगों के लिए विद्यालय खोले और छात्रावास बनवाए।

1901 मे लार्ड कर्जन ने शिमला मे एक गुप्त शिक्षा सम्मेलन किया था, जिसमे 152 प्रस्ताव स्वीकृत हुए थे। इसमे कोई भारतीय नही बुलाया गया था न ही सम्मेलन के निर्णय का प्रकाशन ही हुआ। इसको भारतीयो ने अपने विरुद्ध षड्यंत्र समझा।

:-- 1916 तक भारत मे पांच विश्वविद्यालय थे।

आगे शासन सुधार के लिए साइमन आयोग की नियुक्ति हुई। हर्टाग समिति इस आयोग का एक आवश्यक अंग थी। इसका काम था भारतीय शिक्षा की समस्याओ की सांगोपांग जांच करना। समिति ने रिपोर्ट मे 1918 से 1927 तक प्रचलित शिक्षा के गुण और दोष का विमोचन किया और सुधार के निर्देश दिए।

भारत के लिए अंग्रेजो की शिक्षा नीति:-

ब्रिटिश काल मे शिक्षा मे मिशनरियो का प्रवेश हुआ, इस काल मे महत्वपूर्ण शिक्षा दस्तावेज मे मेकाले का घोषणापत्र 1835, वुड का घोषणापत्र 1854, हण्टर आयोग 1882 सम्मलित है। इस काल मे शिक्षा का उद्देश्य अंग्रेजो के राज्य के शासन सम्बन्धी हितो को ध्यान मे रखकर बनाया गया था।

स्वतन्त्रा के बाद:-- बदलता हुआ शिक्षा का प्रारुप:-

राधाकृष्णन आयोग/ विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग-1948-49

ममाध्यमिक शिक्षा आयोग/ मुदालियर आयोग – 1952-53

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग- 1956

कोठारी शिक्षा आयोग- 1964-66

राष्ट्री शिक्षा नीति/ पहली शिक्षा नीति -1968

42वा संवैधानिक संशोधन-1976 शिक्षा के लिए

दुसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति -1986

रुपांतरित राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1992

तीसरी शिक्षा नीति/ नई शिक्षा नीति -2020

नई शिक्षा नीति 2020:-

यह नीति टि॰ एस॰ आर ॰ सुब्रमण्यम समिति की रिपोर्ट 27 मई 2016

डॉ॰ के॰ कस्तूरारंगन की रिपोर्ट 21 मई 2019

इन दोनो समितियो के मसौदे केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री रमेश पोखरियाल को प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात वर्ष 1992 मे शिक्षा पर मौजूदा राष्ट्रीय नीति 1986 संशोधन करने के 34 वर्ष बाद भारत की युवा आबादी की समकालीन जरूरतो और भविष्य की जरूरतो को पुरा करने के लिए आवश्यक बदलाव 2020 की नीति मे किए गए।

नई शिक्षा नीति द्वारा भारत मे बदलता शिक्षा का ढांचा:-

बच्चो के ज्ञानात्मक और सामाजिक भावनात्मक विकास के चरणो के आधार पर, एक 5+3+3+4 रूपी पाठ्यक्रम और शैक्षणिक संरचना मूलभूत चरण को स्थापित किया जा रहा है।

देश भर मे केन्द्रीय विश्वविद्यालय मे सामान्य प्रवेश के लिए राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (NTA) आम प्रवेश परीक्षा (CEE) आयोजित करेगी।

आनलाइन डिजिटल संरचना को लागु किया जा रहा है।

एम॰ फिल बंद किया गया।

नई पाठ्यक्रम रूपरेखा तैयार की जा रही है।

NAAC, NBA, NIRF को मिलाकर नई संस्था भारत के उच्च शिक्षा आयोग (HECI) की स्थापना नई शिक्षा नीति मे इसकी व्यवस्था है।ताकी शिक्षा की व्यवस्था को स्थिर व अच्छा बनाया जा सके।

वव्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के लिए राष्ट्रीय समिति का गठन किया जाएगा।

NEP 2020 मे केन्द्र और राज्यो द्वारा शिक्षा पर खर्च किए जाने वाले GDP का 6% लक्ष्य रखा है।

भारत की उच्च शिक्षा व्यवस्था मे वर्तमान विश्वविद्यालय 25/11/2022:--

राज्य विश्वविद्यालय------ 460

डीम्ड विश्वविद्यालय--------128

केन्द्रीय विश्वविद्यालय------54

निजी विश्वविद्यालय---------430

कुल विश्वविद्यालय--------1072

भारत मे सर्वाधिक 6 केन्द्रीय विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश मे है।

UGC की सुची के अनुसार सबसे अधिक विश्वविद्यालय राज्य्थान राज्य मे है।

NIRF / India Ranking शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की जाती है।